आईआईएम टॉपर्स इंजीनियरिंग बैकग्राउंड से, क्योंकि टीम लीडिंग और प्रबंधन में मौके अधिक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रायपुर

आईआईएम ने अपने 12वें दीक्षांत में 17 एक्सचेंज ग्रेजुएट 233 पोस्टग्रेजुएट प्रोग्राम, 21 पीजीपीएमडब्ल्यूई, 172 ईपीजीपी और मैनेजमेंट ग्रेज्युट के अंतर्गत 2 एग्जीक्यूटिव फेलो प्रोग्राम के छात्रों को उपाधि प्रदान की। विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर करने वाले छात्रों और क्लास टॉपर्स को आईआईएम ने पदक भी दिए। मैनेजमेंट पाठ्यक्रमों में टॉप करने वाले अधिकतर छात्र इंजीनियरिंग बैकग्राउंड के रहे। उनका कहना है कि इंजीनियरिंग की तुलना में मैनेजमेंट और लीडरशिप में अवसर अधिक हैं, इसलिए बीटेक-एमटेक करने के बाद एमबीए की राह पकड़ी।

- **जिन्हें मिली उपाधि उनकी आधी पढ़ाई हुई ऑनलाइन और आधी ऑफलाइन मोड में**

मुख्य अतिथि रहे नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के एमडी आशीष चौहान ने कहा, छात्रों को भारत के पारंपरिक ज्ञान से सीखना चाहिए। वर्तमान की सामाजिक चुनौतियों के लिए नए समाधान ढूंढने की आवश्यकता है। उन्होंने चुनौतीपूर्ण महामारी के समय में भारत की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को बेहतर करने प्रोत्साहित किया। आईआईएम रायपुर के गवर्नर मंडल की अध्यक्ष श्यामला गोपीनाथ और डायरेक्टर प्रो. रामकुमार काकानी ने सपनों को साकार करने और उनके समाज को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

आईआईएम का 12वां दीक्षांत, एनएसई एमडी आशीष चौहान ने बांटी उपाधि

लीडरशिप में आनंद

आयुष कुमार ने पीजीपी अध्यक्ष का पदक प्राप्त किया। वेल्लूर से इंजीनियरिंग की उपाधि लेने के बाद उन्होंने भी मैनेजमेंट की राह चुनी। वे बताते हैं कि इंजीनियरिंग के दौरान कई प्रोजेक्ट में उन्हें लीड करने का मौका मिला। इसमें मजा आने लगा। उन्हें यह सीखना था कि जो वे बतौर इंजीनियर आउटपुट कंपनी को देते हैं, प्रबंधन उसका कैसे प्रयोग करता है। इसलिए इंजीनियरिंग के बाद एमबीए किया। मूलतः रांची के रहने वाले आयुष फिलहाल हैदराबाद की एक कंपनी में कार्यरत हैं।

मैकेनिकल इंजीनियरिंग के बाद एमबीए

डायरेक्टर गोल्ड मेडल अपने नाम करने वाली करबेलकर श्वेता राहुल पढ़ाई पूरी करने के बाद 18 लाख रुपए वार्षिक के पैकेज पर बेंगलुरू में कार्यरत हैं। मैकेनिकल इंजीनियरिंग के बाद श्वेता ने एमबीए की राह चुनी। वे कहती है कि कंपनी में शीर्ष भूमिका निभाने के लिए मैनेजमेंट का ज्ञान होना जरूरी है। इसमें मौके भी बेतरह हैं। इंजीनियरिंग के दौरान इसमें रुचि जागी। अनुभव प्राप्त करने के बाद स्वयं की कंसलटेंसी या स्टार्टअप की योजना है।

कोविड के कारण कई चीजें छूटी

पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम के अंतर्गत अदिति जोशी ने बीओजी अध्यक्ष स्वर्ण पदक प्राप्त किया। हर्षित जैन को सर्वश्रेष्ठ समग्र प्रदर्शन के लिए पदक प्राप्त किया गया। मूलतः कर्नाटक के हर्षित ने बताया, कोविड के कारण हमारी आधी पढ़ाई ऑफलाइन मोड में हुई और आधी पढ़ाई ऑनलाइन मोड में हुई। स्टूडेंड इंट्रक्शन की कमी इस दौरान खली। फिलहाल एक फ्रेंच कंपनी के साथ कार्य कर रहे हर्षित मैनेजमेंट क्षेत्र में ही आगे बढ़ना चाहते हैं।

मैनेजमेंट के लिए एमबीए जरूरी

एग्जीक्यूटिव पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम के अंतर्गत शिवेश कुमार ने बीओजी अध्यक्ष का स्वर्ण पदक अपने नाम किया। उनकी अनुपस्थिति में उनके दोस्त शशांक ने यह मेडल लिया। रीचा कुमारी ने अध्यक्ष का स्वर्ण पदक और अद्वितीय पाटनी ने पीजीपी अध्यक्ष का पदक अपने शैक्षिक प्रदर्शन के लिए प्राप्त किया। अद्वितीय पाटनी फिलहाल हैदराबाद की एक कंसलटेंट कंपनी में कार्यरत हैं। अद्वितीय कहती हैं देहरादून से बीटेक करने के बाद मार्केटिंग और स्ट्रेटजी में दिलचस्पी जागी। अपर मैनेजमेंट में जाने के लिए एमबीए जरूरी था, इसलिए यह चुना।

Haribhoomi, 25th April, 2023, P.14